

## श्रीमद् स्वामी राजेश्वरानन्द सरस्वतीजी महाराज, वृन्दावन

माता श्री जानकी जी के मानस पुत्र एवं श्री रामचरित मानस के सस्वर गायक श्रीमद् स्वामी राजेश्वरानन्द सरस्वती जी महाराज मानस के ऐसे अद्वितीय कथाकार के रूप में जाने जाते हैं जिन की कथा में सुविज्ञ एवं विद्वान श्रोताओं को आध्यात्म की, और सकल जन को मनोरंजन की, समान रूप से प्राप्ति होती है। मानस है ही – *बुध विश्राम सकल जन रंजनि।*

राजेश रामायणी के नाम से प्रसिद्ध श्री स्वामीजी का जन्म बुन्देलखंड क्षेत्र में उरई (उ.प्र.) शहर के समीप पचोखरा ग्राम में 22 सितंबर सन् 1955 को हुआ था। आपके पूज्य पिता पं. श्री अमरदान शर्मा संगीत के शास्त्रीय एवं लोक पक्ष के यशस्वी भक्त, गायक थे। अतः भक्ति साहित्य एवं स्वर संगीत का संस्कार बाल्यकाल से ही विरासत के रूप में श्री स्वामीजी को प्राप्त हुआ तथा आपकी जन्मदात्री माता शान्तिदेवी के सरल स्वभाव ने आपमें सन्तत्व भर दिया। यही कारण था कि श्री स्वामीजी अपने गृहस्थ जीवन में भी सदैव सन्त वृत्ति से रहे तथा प्रभु कृपा से उचित समय आने पर अपने गुरुदेव श्री श्री 108 श्रीमद् स्वामी अविनाशीरामजी महाराज, वृन्दावन (श्रीमद् स्वामी रामानन्द सरस्वती) द्वारा सन्यास ग्रहण कर 'राजेश रामायणी' से श्रीमद् स्वामी राजेश्वरानन्द सरस्वती हो गये। लगभग 30 वर्षों से आपके द्वारा प्रवाहित श्रीराम गंगा में देश-विदेश के अनेकानेक रामभक्तों ने अवगाहन लाभ लिया है। गांवों से महानगरों तक, और सभी श्रेणी के सद्गृहस्थ भक्तों से सन्त महापुरुषों तक प्रभु कृपा से श्री स्वामीजी को सर्वत्र समान रूप से श्रद्धा और स्नेह प्राप्त है।

श्री स्वामीजी द्वारा रचित ललित पदावली से पूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। किन्तु अभी वे उपलब्ध नहीं हैं। उनका पुनःप्रकाशन का कार्य प्रगति पर है।

श्री स्वामीजी महाराज द्वारा स्थापित दो आश्रम हैं :-

1. अमर शान्ति आश्रम, पचोखरा उरई (उ.प्र.) जहां श्री हनुमानजी तथा श्री शंकर भगवान विराजमान हैं। सन्त सेवा दरिद्र सेवा एवं समाज सुधार सेवा के कल्याणकारी कार्य सदैव होते रहते हैं।
2. अमर शान्ति आश्रम, कैलाशनगर, वृन्दावन (उ.प्र.) यहां भी लोक कल्याणकारी सेवायें संचालित हैं।

इन समस्त उपलब्धियों में श्री स्वामीजी अपने जीवन सर्वस्व श्री सीतारामजी की अहैतु की कृपा, संत महापुरुषों का आशीर्वाद तथा गुरुदेव के अनुग्रह को ही मुख्य मानते हैं एवं श्री हनुमानजी महाराज की भावमयी उपस्थिति ही उनके द्वारा श्रीराम गुण गायन कराती है, ऐसा उनका अपना विश्वास है। तभी वे कहते हैं:-

तुलसीदासजी के पदकमल बारम्बार मनाय।  
गुन गावहुं सियराम के हनुमत होहु सहाय।।  
लेत सदा सुधि दीन की सहज दया के धाम।  
जननि जनक राजेश के प्रभु श्री सीताराम।।

।।जय सीताराम।।